CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता

ब्रह्मचिन्तनिका

[हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद सहित]

सम्पादक—

ब्रह्मचारी रामनिरञ्जनस्वरूप

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* ॐ *

श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता

ब्रह्मचिन्तनिका

[हिन्दी अङ्गरेजी अनुवाद सहित]

हिन्दी अनुवादक—

पण्डित श्री चन्द्रभानु शास्त्री

सम्पादक—

ब्रह्मचारी रामनिरञ्जनस्वरूप

विष्णुघाट, हरिद्वार (यू॰ पी॰)

भाद्रपद शुक्ला दशमी, सम्वत् १९९७

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

मुद्रक—

पं० ब्रह्मदत्त शर्मा, योगी प्रेस, हरद्वार

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango





❋ ब्रह्मचिन्तनिका ❋



अहमेव परं ब्रह्म वासुदेवाख्यमव्ययम् ।
इति स्यान्निश्चितो मुक्तो बद्ध एवाऽन्यथा भवेत् १

जिसे वासुदेव कहते हैं, जो स्वरूप किंवा धर्म से कभी विकृत नहीं होता, वह परब्रह्म मैं ही हूं यह जिसे निश्चय हो चुका है वह मुक्त है और जिसे वैसा निश्चय नहीं हुआ है वह बद्ध है ॥१॥

अहमेव परं ब्रह्म नचाहं ब्रह्मणः पृथक् ।
इत्येवं समुपासीत ब्राह्मणो ब्रह्मणि स्थितः ।२।

मैं ही परब्रह्म हूँ, ब्रह्म से मैं पृथक नहीं हूँ, इस प्रकार की उपासना करे तो ब्राह्मण ब्रह्म में स्थित हो ॥ २ ॥

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

अहमेव परं ब्रह्म निश्चित्य चित्तचिन्तितम् ।
चिद्रूपत्वादसङ्गत्वादबाध्यत्वात् प्रयत्नतः ।३।

ज्ञान रूप होने से, सङ्गरहित होने से, त्रिकाल में बाधित न होने से, मैं ही परब्रह्म हूँ यह चित्त में विचार करके गुरूपदेश वेदान्तवाक्य और अकाट्य तर्कों से अपने में ब्रह्मभावना स्थिर करे ॥ ३ ॥

सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं चैतन्यं च निरन्तरम् ।
तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा कथं वर्णाश्रमी भवेत् ।४।

सदा सब उपाधियों से रहित चैतन्यघन मैं ही हूँ यह निश्चय करके वर्णाश्रम के नियमों में कैसे बँध सकता है ॥ ४ ॥

अहं ब्रह्मास्मि यो वेद स सर्वं भवति त्विदम्
नाभूत्या ईशते देवास्तेयमात्मा भवेद्धि सः ।५।

जो मैं ही ब्रह्म हूं यह जान चुका है वह सर्व रूप हो चुका है। जिसकी माया का आधिपत्य इन्द्रादि देवताओं को भी प्राप्त नहीं हुआ है, तेरा आत्मा वही परब्रह्म तो है ॥ ५ ॥

अन्योसावहमन्योस्मीत्युपास्ते योऽन्यदेवताम् ।
न स वेद नरो ब्रह्म स देवानां यथा पशुः ।६।

जो (उपासक) मैं भिन्न हूँ, और यह (उपास्य) देवता मेरे से भिन्न है इस प्रकार भेदोपासना करता है वह ब्रह्म को नहीं जानता वह तो विद्वानों में पशु जैसा है ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहमात्मा न चान्योस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् ।
सच्चिदानन्दरूपोहं नित्यमुक्तः स्वभाववान् ।७।

मैं आत्मा हूँ—आत्मा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ। मैं ब्रह्म ही हूँ। जरा, मृत्यु, शोक, मोह आदि षड् र्मियों के प्रभाव से परे हूं। मैं सच्चिदानन्दस्वरूप हूं, नित्य मुक्त हूं, अपने रूप में विद्यमान हूँ॥ ७॥

आत्मानं सततं ब्रह्म सम्भाव्य विहरेत्सुखम् ।
क्षणं ब्रह्माहमस्मीति यः कुर्यादात्मचिन्तनम् ॥
तन्महापातकं हन्ति तमः सूर्योदये यथा ।८।

आत्मा का सदा ब्रह्म रूप से चिन्तन करता हुआ सुख में विहार करे। मैं ब्रह्म हूं—इस तरह एक क्षण मात्र के चिन्तन करने से सारे महापातकों को इस प्रकार नष्ट कर देता है जैसे उदय होते ही सूर्यनारायण अन्धकार को नष्ट कर देते हैं॥ ८॥

अज्ञानाद् ब्रह्मणो जातमाकाशं बुद्बुदोपमम् ।
आकाशाद् वायुरुत्पन्नो वायोस्तेजस्ततःपयः ।
अद्भ्यश्च पृथिवी जाता ततो व्रीहियवादिकम् ।९।

तमःप्रधान ब्रह्म की शक्ति से बुलबुले के समान आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से तेज, उससे जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से धान, गेहूँ, जौ आदि अन्न उत्पन्न हुए हैं॥९॥

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथिव्यप्सु पयो वन्हौ वन्हिर्वायौ नभस्यसौ ।
नभोऽव्याकृते तच्च शुद्धे शुद्धोऽस्म्यहं हरिः ।१०।

पृथ्वी जल में, जल अग्नि में, अग्नि वायु में, वायु आकाश में, आकाश अव्याकृत (माया) में, माया शुद्ध ब्रह्म में विलीन हो जाती है। जिस शुद्ध ब्रह्म में इन सबका लय होता है वह शुद्ध ब्रह्म मैं ही हूँ ॥ १० ॥

अहं विष्णुरहं विष्णुरहं विष्णुरहं हरिः ।
कृतमोंकारादिकं सर्वं तदविद्यात्तमेवच ।११।

मैं विष्णु हूं, मैं विष्णु हूँ, मैं विष्णु हूँ, मैं हरि हूं। यज्ञ आदि क्रियाकलाप और ओंकारादि मन्त्र समूह तथा अविद्यादि सब ब्रह्म ही है। इस प्रकार ब्रह्म ही को सर्व प्रपञ्चरूप जाने ॥ ११

अच्युतोऽहमनन्तोऽहं गोविन्दोऽहमहं हरिः ।
आनन्दोऽहमशेषोऽहमजोऽहममृतोऽस्म्यहम् ।१२

मैं अच्युत हूँ, मैं अनन्त हूँ, मैं गोविन्द हूँ, मैं हरि हूँ, मैं आनन्द हूँ, मैं अशेष हूँ, मैं अज हूँ, मैं अमृत हूँ ॥ १२ ॥

नित्योऽहं निर्विकारोऽहं निर्विकल्पोऽहमव्ययः
सच्चिदानन्दरूपोऽहं पञ्चकोशातिगोऽस्म्यहम् १३

मैं नित्य हूँ, मैं निर्विकार हूँ, मैं निर्विकल्प हूँ, मैं अव्यय हूँ, मैं सच्चिदानन्दरूप हूं. मैं पञ्चकोश से परे हूँ ॥ १३ ॥

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangot

अकर्ताहमभोक्ताहमसङ्गः परमेश्वरः ।
सदा मत्सन्निधानेन चेष्टते सर्वमिन्द्रियम् ।१४।

मैं कर्ता और भोक्ता नहीं हूं, मैं सब सङ्गों से रहित परमेश्वर हूँ। मेरी सन्निधि मात्र से इन्द्रियां और बाह्य संसार की क्रियाएं चलती हैं ॥ १४ ॥

आदिमध्यान्त मुक्तोऽहं न बद्धोऽहं कदाचन ।
स्वभावनिर्मलः शुद्धः स एवाहं न संशयः ।१५।

मैं आदि-मध्य और अन्त से रहित हूँ, मैं कभी बद्ध नहीं हूं। मैं स्वभाव से निर्मल हूं, शुद्ध हूं। मैं वही (ब्रह्म) हूं इसमें सन्देह नहीं है ॥ १५ ॥

ब्रह्मैवाहं न संसारी मुक्तोऽहमिति भावयेत् !
अशक्नुवन्भावयंस्तु वाक्यमेतत्सदा पठेत् ।१६।

सदा यही भावना करे कि मैं ब्रह्म ही हूँ, संसारी जीव नहीं हूँ, मैं मुक्त हूँ। यदि ऐसी भावना न हो सके तो इन वाक्यों का सदा पाठ ही किया करे ॥ १६ ॥

यदभ्यासेन तद्भावो भवेद् भ्रमर कीटवत् ।
अत्रापहाय सन्देहमभ्यसेत्कृतनिश्चयः ॥१७॥

इनका अभ्यास करते करते भ्रमर कीट की भांति वैसी ही भावना बन जायगी इसमें किसी प्रकार का सन्देह न करके निश्चय पूर्वक इन वाक्यों का अभ्यास करे ॥ १७ ॥

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

ध्यान योगेन मासैक्याद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।
संवत्सर सदाभ्यासात्सिद्ध्यष्टकमवाप्नुयात् १८

इस ब्रह्मैक्य का एक महीना ध्यान करने से ब्रह्महत्या से मुक्त होता है। निरन्तर एक वर्ष अभ्यास करने से अणिमादि आठ सिद्धियां प्राप्त होती हैं ॥ १८ ॥

यावज्जीवं सदाभ्यासाज्जीवन्मुक्तो भवेद्यतिः ।
एवं योऽभ्यसते सम्यगेकात्म परमात्मनौ ॥१६॥

आयुपर्यन्त नित्य अभ्यास करने से संन्यासी जीवन्मुक्त होता है। इस प्रकार जीवात्मा और परमात्मा का ऐकात्म्य भाव से ध्यान करते करते मुक्ति प्राप्त कर लेता है ॥ १६ ॥

नाहं देहो न च प्राणो नेन्द्रियाणि तथैवच ।
न मनोऽहं न बुद्धिश्च नैवचित्तमहङ्कृतिः ।२०।

मैं देह नहीं हूँ, मैं प्राण नहीं हूँ, मैं इन्द्रियां नहीं हूँ, मैं बुद्धि नहीं हूँ, मैं चित्त नहीं हूँ, मैं अहङ्कार नहीं हूँ ॥ २० ॥

सर्वज्ञोऽहमनन्तोऽहं सर्वेशः सर्वशक्तिमान् ।
आनन्दः सत्यबोधोऽहमिति ब्रह्मानुचिन्तनम् २१

मैं सर्वज्ञ हूँ, मैं अनन्त हूँ, मैं सर्वेश और सर्वशक्तिमान हूँ. मैं आनन्द हूँ, मैं सत्य हूँ, मैं ज्ञान हूँ, इस रीति से ब्रह्म का चिन्तन करे ॥ २१ ॥

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाहं पृथ्वी न सलिलं न च वह्निस्तथानिलः ।
न चाकाशो न शब्दश्च न च स्पर्शस्तथारसः २२

मैं पृथिवी नहीं हूँ, मैं जल नहीं हूँ, मैं अग्नि नहीं हूँ, मैं वायु नहीं हूँ, मैं आकाश नहीं हूँ, मैं शब्द स्पर्श तथा रस नहीं हूँ ॥ २२ ॥

नाहं गन्धो न रूपं च न मायाहं न संसृतिः।
सदा साक्षीस्वरूपत्वाच्छिव एवास्मि केवलः २३

मैं गन्ध नहीं हूँ, मैं रूप नहीं हूँ, मैं माया नहीं हूँ, मैं संसार नहीं हूँ, मैं सदा साक्षीस्वरूप हूँ, मैं केवल शिव हूँ ॥ २३

मय्येव सकलं जातं मयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
मयि सर्वं लयं याति तद्ब्रह्मास्म्यहमद्वयम्।२४।

मेरे में ही यह सारा प्रपञ्च उत्पन्न हुआ है, मेरे आश्रय से ही यह सारा प्रपञ्च स्थित है और मेरे में ही यह सब विलीन होजाता है। इस प्रकार जो सबके अनन्तर शेष रहता है वह अद्वितीय परब्रह्म मैं ही हूँ ॥ २४ ॥

अयं प्रपञ्चो मिथ्यैव सत्यं ब्रह्माहमव्ययम् ।
अत्र प्रमाणं वेदान्तोऽनुभवोगुरवस्तथा ॥२५॥

यह सारा प्रपञ्च मिथ्या है, इस कारण मैं सत्य, अव्यय, परब्रह्म हूँ, इसमें वेदान्त वाक्य, गुरु वाक्य और मेरा अपना अनुभव प्रमाण हैं ॥ २५ ॥

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

ब्रह्मैवाहं न संसारी न चाहं ब्रह्मणःपृथक् ।
नाहं देहो न मे देहः केवलोऽहं सनातनः २६

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचिता ब्रह्मचिन्तनिका समाप्ता ॥

मै ब्रह्म ही हूँ, संसारी जीव नहीं हूँ, मैं ब्रह्म से कदापि पृथक नहीं हूँ, मैं देह रूप नहीं हूँ, न देह मेरी उपाधि है, मैं तो केवल हूँ, सनातन हूँ ॥ २६ ॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचिता ब्रह्मचिन्तनिका का हिन्दी अनुवाद समाप्त ॥



C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

❈ Aum ❈

BRAHMA-CHINTANIKA

OF

SHREE SHREE SANKARACHARYA.



1. One who has realised, "I am that Supreme Self who is called VASUDEVA and who never changes," is free from bondage. He who has not realised this is in bondage.

2. If a BRAHMAN meditate, "I am the Supreme Self and not different from Him," he becomes established in the Supreme Self.

3. One should seriously attempt to fix firmly in the mind the idea, "I am the Supreme Self, because I am knowledge, I am without any association, and I am not determined by time."

4. How can one be bound by the rules of caste and creed, when one has realised, "I am ever self-conscious and free from all UPADHIS."

5. One who has realised, "I am the Supreme Soul," has become all whatsoever. Verily

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

thou art that Supreme Soul Who cannot be comprehended even by the gods.

6. He who thinks that he is different from the god whom he worships, does not know the Supreme Self. He is just like an animal among the learned.

7. I am the soul and not anything different from the soul. I am the Supreme Self and not affected by the six kinds of affliction viz, grief, illusion, hunger, thirst, decay and death. I am Existence Absolute, Knowledge Absolute, and Bliss Absolute. I am ever free and in my true nature.

8. One should always be gladly meditating that the Individual Soul is the same as the Supreme Soul. Meditation even for a moment on the idea that I am the Supreme Soul, destroys all great sins, just as the rising sun destroys darkness.

9. Ether originates from the gross element in the Supreme Soul like bubbles from water. Air originates from Ether, Fire from Air, Water from Fire, Earth from Water, and

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

all kinds of grains e. g. wheat, barley etc. from Earth.

10. Earth dissolves into Water, Water into Fire, Fire into Air, Air into Ether, and Ether into the undifferentiated primeordial cause—MAYA—and MAYA into the absolutely pure Supreme Self. I am that Supreme Self whom do all these dissolve into.

11. I am VISHNU; I am VISHNU; I am VISHNU; I am HARI. All actions such as holy sacrifice etc., all sacred texts such as ONKAR (ओंकार) etc., and Primeval Ignorence (AVIDYA) etc. are all nothing but the Supreme Self. One should realise that it is the Supreme Self what is all around.

12. I am ACHYUTA (Non-decaying); I am ANANTA (Infinite); I am Govinda; I am Hari; I am bliss; I am complete; I am unborn; I am ever-lasting.

13. I am ever present; I am immutable; I am unconditioned; I am unchangeable; I am existence absolute, knowledge absolute and bliss absolute. I am beyond the bounds of five fold sheaths.

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

14. I am neither doer nor enjoyer. I am the Supreme Self free from all attachment. All the senses do their work owing to my presence.

15. I am without beginning, middle, and end. I am never in bondage. I am pure by my very nature. There is no doubt that I am that Supreme Self.

16. One should always contemplate "I am the Supreme Self, not a worldly being; and I am ever free." If this is not possible, one should always read these sentences.

17. Continuous practice of reading these sentences will produce in the mind the very ideas contained in them according to BHRAMARA-KEETA-NYAYA. So one should practise reading these sentences without any hesitation or doubt.

18. One who meditates on the unity of the Individual and the Supreme Self continuously for a month, becomes free from the sin of killing a BRAHMIN. If one continues the practice for one year, one becomes the

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

possessor of eight supernatural powers, SIDDHIS such as ANIMA, LAGHIMA etc.

19. A SANYASI who always meditates on the unity of the Individual and the Supreme Self throughout the whole life becomes liberated in this very life.

20. I am not the body; I am not the life principle; I am not the senses; I am not mind; I am not intellect; I am not the thinking principle; I am not egoism.

21. I am omniscient, infinite, all controlling, omnipotent. I am bliss absolute, truth absolute, knowledge absolute. One should meditate like this.

22. I am not Earth, nor Water, nor Fire, nor Air, nor Ether. I am neither Sound, nor Touch, nor Taste.

23. I am neither Smell, nor Form, nor MAYA, nor World. I am ever a witness. I am Good Absolute.

24. This whole world originates in me, exists in me and dissolves in me. I am that

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Supreme Self without a second.

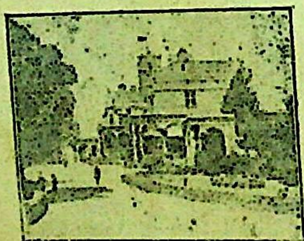
25. This whole out-ward world is false. Verily I am true, unchangeable, Supreme Self. The proofs of this are to be found in VEDANTA, in the words of preceptor, and in my own experience.

26. I am the Supreme Self, not a worldly being. I am never different from the Supreme Self. I am not body, neither body is my shackle I am absolute and ever-lasting.



C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang



Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGa

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGa

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango